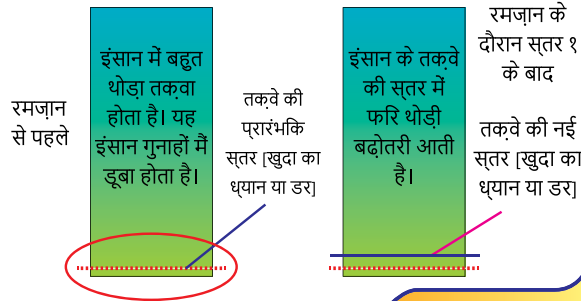


भनिन भनिन प्रकार के रोजों का संक्षिप्त विवरण

सुबह सूर्य से पहले से लेकर सांझ सूर्य ढलने तक के खाने पीने और मयि-बीवी को शारीरिक संबंधों से रुकना होता है और साथ में रोजाना की पांच नमाज़ें और तरावीह पढ़नी होती है

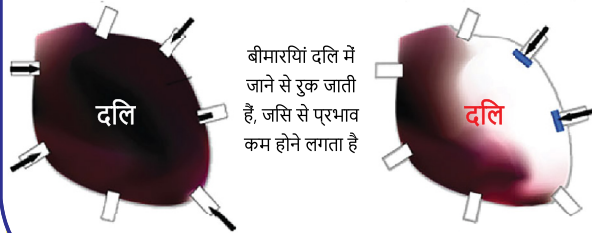


स्तर १

जुबान, आंखों, और पैरों के गुनाहों को जानना और उन से बचना [स्तर १ समेत]

शरीर के गुनाहों के कारण दिल का काला होना

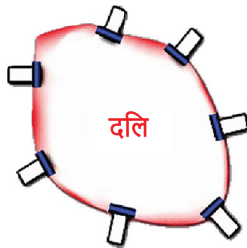
शरीर के तीन अंगों के गुनाहों से रुकने का प्रभाव



स्तर २

शरीर के सब गुनाहों को जानना और उन से रुकना [स्तर १ और २ समेत]

पवित्र दिल जिस में बुराई के सब दरवाजे बंद हों



एक एक कर के गुनाहों के सब अंधेरे दूर होजाते हैं। इस प्रकार से दिल साफ होने लगता है और जिकिर और इबादत का प्रभाव दिखने लगता है।

स्तर ३

अपने दिल को इस्तेमाल करें और अपनी इबादतों में अल्लाह को पुकारें। अपने शारीरिक अंगों द्वारा अच्छे काम करें और अल्लाह और उसकी मखलूक के अधिकारों को पूरा करें और साथ में रमजान के आमाल भी पूरे करें [स्तर ३ समेत]

शरीर के सब अंगों के गुनाहों से बचाने से इंसान में तक्वा बढ़ता (खुदा का डर) जाता है (स्तर ३ + ४)



स्तर ४

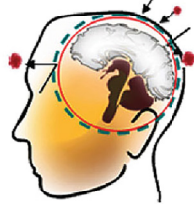
पापी वचिारों से बचना [स्तर ४ समेत]

पापी वचिार दमिग में आते हैं

ऐसा इंसान अपनी इच्छाशक्त को काम में लाए और अल्लाह ताआला की शरण ले, इस प्रकार से पापी वचिारों से बचा जाए



धीरे धीरे पाप वाले वचिारों से सुरक्षा देने के लिए एक ढाल बनती जाती है



स्तर ५

अपने दिल और दमिग को मौत के बाद वाले जीवन, कयामत, और अल्लाह की क़ुदरत के बारे में सोचने और समझने में लगाएं [स्तर ५]



स्तर ६

अपने दिल और दमिग के ध्यान को अल्लाह और उसके महबूब पैगंबर [सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] पर रखना है और साथ में आखरी नबी [सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] के जीवन का अध्ययन करते रहना है [स्तर ६ समेत]

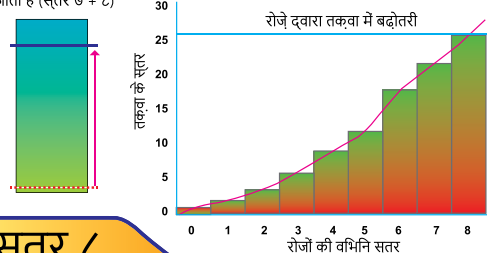


स्तर ७

अल्लाह और उसके महबूब नबी [सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] की मुहबबत में खुद को मटिना होगा और राजे की स्थिति में अपने दिल, दमिग, और आत्मा के साथ अल्लाह की शरण में आना होगा

इस प्रकार से इंसान रोजे द्वारा तक्वा को उसकी ऊंची स्तर तक ले जाता है (स्तर ७ + ८)

यह ग्राफ तक्वा [खुदा का डर] और रोजे के संबंध को बता रहा है



स्तर ८

रमजान के महीने में करने वाले आमाल

- १) जब रमजान शुरू हों तो दो रकअत सालातुत तौबा [तौबा की नमाज़] पढ़ें, फरि अल्लाह को हाज़रि नाज़रि मान कर अपने गुनाहों की माफ़ी मांगें और जो गलत खुद किया और दूसरों के साथ किया उसे स्वीकार करें; यह इरादा करना है कि अब दोबारा गुनाह नहीं होंगे; इस महीने तो बलिकूल नहीं
- २) नबी के जीवन को, नबी की सुन्नत [सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] को अपनाएं और खास तोर पर उन के खाने पीने के तरीकों को
- ३) सालातुत तौबा [तौबा] और सालतुश शुक्र [शुक्र], रोजाना सुबह और शाम, पढ़ कर अल्लाह से माफ़ी मांगें और उसका शुक्र अदा करें जसि ने उम्मत को यह बरकत वाला महीना दिया
- ४) सालातुत तस्बीह रोजाना जुहर की नमाज़ के बाद अदा करें
- ५) कोशिश करें कि हर काम की शुरुआत और अंत दोनों अल्लाह की याद के साथ हो
- ६) यह तीन बातें याद रखें:
कि अल्लाह आप को देख रहा है, सुन रहा है और हर समय वह आप के साथ है, यह सब ऐसी बातें हैं जनि से आप की इबादत नखिर जाती है इसीलिए इन का ध्यान रखें
- ७) खुदा का खौफ रखें, जरूरत के समय अपने पड़ोसियों की सहायता करें और उन के भी काम आएँ जनि का आप पर हक है
- ८) सदका करें और उन के काम आएँ जनि के पास कुछ नहीं है जबकि आप के पास सब कुछ है
- ९) रोजाना सुबह और शाम के मसून अज़कार पढ़ें और उन के अर्थ को जानें
- १०) कोशिश करें जसि स्तर तक हो सके रूहानी रोजे रखने की और एक जगह किसी पत्र पर यह लिख भी लें
- ११) खुशी और लगन के साथ केवल अपने रब की रजा के लिए तरावीह की नमाज़ें अदा करें
- १२) कम से कम भी रोजाना ३० मिनट कुरआन की तलावत करें और उसके अर्थ को समझें
- १३) अपने वक्त का समझदारी से उपयोग करें क्योंकि यह महीना साल में एक ही बार आता है और किसी के लिए यह उसका आखिरी रमजान भी हो सकता है
- १४) कम से कम १५ मिनट के लिए आप को मुनाजात करना चाहिए और अल्लाह के आगे अपने गुनाहों का प्रायश्चित्त करना चाहिए। बन्दे को खुद अपने दिल को इसतेमाल करते हुए अपने रब से बात करनी और माफ़ी मांगनी चाहिए क्योंकि वही [अल्लाह ताला] तौबा करने वालों की सुन्नत है और वही माफ़ी देता है
- १५) आपको रोजाना सुबह और शाम ३०० बार दूरूद पढ़ना चाहिए। क्योंकि यह नबी [सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम] ही थे जनि के द्वारा यह मुबारक महीना इस उम्मत को मिला है
- १६) रोजों के संबंध से अपनी जानकारी को ताज़ा कर लें जैसे रोज़ा कनि चीजों से टूटता है आदि
- १७) वे भाई और बहन जो तज़क़ियाए नफ़्स का कोर्स कर रहे हैं उनको अपने ज़किर करने का वक्त दुगना कर देना चाहिए
- १८) कम से कम ८ रकअत तहज़ुद की नमाज़ अदा करें जनि में अपने रुकू और सजदे के समय को ज़्यादा करें। तहज़ुद में मसून अज़कार में से हर एक को १०० बार पढ़ें। यह ख़याल करें कि जैसे आप अल्लाह ताला की बारगाह में बैठे हैं

اللَّهُ أَكْبَرُ [x100] الْحَمْدُ لِلَّهِ [x100] سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ [x100]
 سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ [x100] أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ [x100] لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ [x100]
 اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ ضَيْقِ الدُّنْيَا وَضَيْقِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ [x100]